जैन विश्व भारती-समण संस्कृति संकाय, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2014-2015

9 ब

जैन विद्या भाग - 9

(जैन दर्शन मनन और मीमांसा-खण्ड 4)

समय : 3 घण्टे | प्रश्न पत्र : द्वितीय | पूर्णांक 100

नोट- पिछले कोर्स से 15 नम्बर के प्रश्न इस प्रश्न पत्र में पूछे जा सकते हैं।

(A) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। 10×2=20

1. आवृत चेतना में कितने ज्ञान हो सकते हैं? नाम लिखें-
2. मति ज्ञान और श्रुत ज्ञान किसे कहते हैं?
3. काल की दृष्टि से अवधिज्ञानी कितना जानता देखता है?
4. आत्मा किसे कहते हैं?
5. 'मन इन्द्रिय है या नहीं' सभी मत इसे क्या मानते हैं?
6. चारित्र मोह के द्वारा प्राणी में क्या मनोवृत्तियां बनती है?
7. बुद्धि के सात प्रधान अंग कौन से है?
8. मनः पर्यव ज्ञान का विषय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा बताएं।
9. प्रत्येक इन्द्रिय ज्ञान के लिए कौनसी चार बातें अपेक्षित होती हैं?
10. भय की उत्तेजना के तीन कारण कौन से हैं?
11. धर्म के साथं पुण्य का क्या संबंध है?

(B) किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर दें। 8×5=40

1. आचारांग सूत्र में कितनी और कौन-कौन सी संज्ञाओं का उल्लेख मिलता है?
2. इन्द्रिय और मन का विभाग क्रम तथा प्राप्ति क्रम क्या है?
3. शरीर और मन का पारस्परिक प्रमाण क्या हो सकता है?
4. श्रुत ज्ञान और उसकी प्रक्रिया को लिखें।
5. वृहत्कल्प भाष्य में केवलज्ञान के कितने लक्षण बताये गये?
6. क्रियात्मक मन के चार तत्त्व कौन-कौन से है?
7. धारणा के कितनें प्रकार है? उनके बारे में लिखिये।
8. स्वाध्याय के प्रकारों के बारे में संक्षिप्त में लिखें।
9. कर्म किसे कहते हैं? ये आत्मा को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

(C) किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें। 4×10=40

1. आचारचूला के और षट्खण्डागम के अनुसार ज्ञेय रूप सब भावों की सूची क्या है?
2. मन के बारे में विस्तार से लिखें।
3. संज्ञा क्या है? ये कितनी है? विस्तार से वर्णन करें।
4. ज्ञान की नियामक शक्ति के बारे में विस्तार से बताएं।
5. ज्ञेय-अज्ञेय की मींमासा करें।